

परंपरा से भिन्न तुलसी का काव्यादर्श

डॉ. सुमित्रा कोतपल्ली,
प्राच्य भाषा विभाग
सर सी आर रेड्डी कॉलेज,
एल्लुरु

रामधारा के अंतर्गत साहित्यिक उत्कर्ष और गुणों के कारण जिनका नाम गौरव के साथ स्मरण किया जाता है, वे कवि शिरोमणि गोस्वामी तुलसी दास हैं। तुलसीदास ने अपने को कवि के रूप में कभी भी चर्चित नहीं किया और मानस में स्पष्ट घोषणा की कि “भणिति भदेस बस्तु भल बरनी” रामकथा जगमंगल करनी। “ किंतु उन्होंने जिस रामकथा की स्वर्ण मुद्रिका में अपनी कविता के रत्नों को जड़ा उसकी तृप्ति से रामकथा भी देदीप्यमान हो गई। ‘रामचरितमानस’ अपने समय में जीते हुए मनुष्य और अन्य जीवों के कलुषित मिटाकर मंगल करणी कलिमल हरिणी रघुनाथ की कथा है। यह कथा नर से नारायण बनने की भी है। यह आत्मकल्याण की है। यह कथा सकल लोक के लिए जग पावनी गंगा के समान है। यह भारतीय वाङ्मय की अमृत-कथा है। संस्कृत साहित्य शास्त्र में कभी इतना ही काव्य लक्षण पर्याप्त समझा जाता था कि काव्य या साहित्य वही है जिसमें शब्द और अर्थ साथ हो। “शब्दार्थ सहितौ काव्यम्।” यह लक्षण काव्य को वेद और पुराणेतिहास से पृथक् कर देता है। पर उसके स्वकीय वैशिष्ट्य को पूर्णतया स्पष्ट नहीं करता। ‘वेद’ में शब्द की प्रधानता होती है, शब्द गौण रहता है। काव्य में शब्द और अर्थ दोनों की प्रधानता है, प्रत्युत दोनों सयुक्त रहते हैं जल तरंग की भांति”¹

वास्तव में तुलसीदास ने अपनी काव्य संवेदना से मानवीय हृदयतंत्री को जिस ढंग से झकृत किया और रसमग्नता की जैसी स्थितियां निर्मित की हैं, वे अन्यत्र विरल हैं। उन्होंने रीति काव्यों की भांति कृत्रिम शब्दावली के प्रयोग द्वारा भाव व्यंजना के उत्कर्ष उसकी सरसता पर कथमपि कुठाराघात नहीं किया। उन्होंने जन-मानस को स्पर्श किया और अपने कौशल द्वारा उनके प्रस्तुत भावों को उद्घाटित किया। जन मानस पर उनकी भाव-व्यंजना की सहजता और मधुरता का क्या था, इसे एडविन ग्रीव्ज के शब्दों में देखें “Tulasi Das wrote not to display his learning or, to tickle the ear of pedants, he wrote the people and has his reward. No poet in England has ever been to the masses what tulasi das has been to the people of his land.”²

गोस्वामी तुलसीदास ने अपने काव्य में संत-असंत को व्यापक अर्थ में ग्रहण किया है। अधिकांश संत शब्द से तात्पर्य उन्होंने ऐसा महापुरुषों से लिया है, जिनका जीवन सद्गुणों से संचालित है। जिनके कार्य – व्यवहार आत्मोन्नयन के साथ-साथ किसी न किसी रूप में विश्वकल्याण के प्रवृत्त हैं। जिनमें स्वार्थ बुद्धि की अपेक्षा परमार्थ बुद्धि की प्रधानता है। ऐसी महान विभूतियों के अभिज्ञान के लिए उन्हें वे सारे अभिधान स्वीकार्य हैं, जो संत, साधु, सज्जन, सत्पुरुष, महात्मा, महापुरुष आदि किसी भी पर्याय के रूप में प्रचलित हो, यो तो संत के अस्तित्व होना आवश्यक है। “सज्जन यदि राम के स्नेह से भी सरस हो तो वह साधुओं की सभा में विशेष आदर का पात्र हो जाता है। तथापि यदि कोई नास्तिक भी निश्छल भाव से सारे संसार के प्राणियों का उद्धार करता है तो वह भी संत कोटि में आ जाता है।”³ राक्षसों के समाज में सबके सब रावण के समर्थक नहीं हैं। विभीषण की सात्विकता तो उजागर है। लेकिन कई ऐसे पात्र भी हैं जो रावण के प्रभाव या भय से शरीर से उसके साथ हैं, लेकिन मन-मस्तिष्क से चाहते हैं कि रावण का आतंक समाप्त हो लंकिनी इसका प्रमाण है। एक सीमा तक कुंभकर्ण भी राम से युद्ध करने के पूर्व अपने अंतर्द्वंद से

रावण कि अनीति को प्रमाणित करता है। मंदोदरी, त्रिजटा, सुलोचना आदि ऐसी नारी शक्तियाँ हैं, जो लंका के वैभव के बीच भी सद-असद का विवेक नहीं खोती हैं।

‘रामचरितमानस’ में श्री राम द्वारा शबरी को दिया गया नवधा- भक्ति का उपदेश। भागवत में प्रतिपादित श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सांख्य एवं आत्मनिवेदन के नौ रूपों वाली नवधा भक्ति के स्थान पर वे जिस नवधा-भक्ति का कथन श्री राम द्वारा कराते हैं, उसमें भी भक्ति के लोक संग्राही रूप को ओझल नहीं होने देते। संतो की संगति प्रभु के कथा-प्रसंग में रति, गुरु पद सेवा, प्रभु का गुणगान, दृढ़ विश्वास के साथ राम नाम के मंत्र का जप, इन्द्रिय निग्रह एवं शील के साथ निरंतर सज्जनता का निर्वाह, जगत भर को समत्व भाव के साथ राममय देखते हुए “संतो का सम्मान करना, संतोष-भाव के साथ दूसरे के दोषों की उपेक्षा करना तथा सबके साथ निश्छल एवं सरल बर्ताव करते हुए प्रभु राम का हृदय में भरोसा रखकर हर्ष एवं दैन्य (दीनता) से ऊपर उठना।”⁴

‘रामचरितमानस’ उत्तरकाण्ड में भरत के प्रश्न के उत्तर में संत-असंत के लक्षण बताते हुए प्रभु श्री राम कहते हैं कि परोपकार से बढ़कर कोई धर्म नहीं और पर-पीड़ा के सामान कोई अधर्म नहीं है और यह बात केवल मैं नहीं कह रहा हूँ। समस्त पुराणों और वेदों का यह निष्कर्ष है जिस ज्ञानी जन जानते हैं।

“परहित सरिस धर्म नहीं भाई। परपीड़ा सम नहीं अधमाई।

निर्नय सकल पुराण वेद कर काहेड़ा तात जानहि कोविद नर ॥

क्या दुनिया में इससे अच्छी भी कोई धर्म-अधर्म की परिभाषा हो सकती है। जैसे मानव - मानव में भेद न करने वाले और प्राणी मात्र की कल्याण-कामना से ओत-प्रोत असंख्य विचार भरे पड़े हो। इसी धर्म और संस्कृति के अमर गायक हैं, गोस्वामी तुलसीदास इनकी कहीं गई धर्म की परिभाषाओं को मानकर इस मानव-धर्म को यदि संसार के सारे मनुष्य अपना ले तो शायद कोई समस्या ही शेष न बचे तब शायद पृथ्वी पर विनाशकार्य उत्पादों का अविष्कार ही बंद हो जाये और वह कल्याणकारी पथ पर द्विगुणित वेग से आगे बढ़ सके। तब शायद मनुष्य मनुष्य के रास्ते की बाधा बनकर उसे नीचा दिखाने का काम न करे और वह एक दूसरे का सहारा बन कर परस्पर ऊँचा उठने-उठाने में लगे। पृथ्वी के अतिरिक्त अन्य कहीं स्वर्ग खोजने की जगह तब शायद यहीं वह स्वर्ग देखने को मिल सके।

तुलसी के ‘रामचरितमानस’ का अखण्ड पाठ भी होता है, नियमित परायण भी होता है, रामलीलाएँ भी होती हैं और राम नाम भी हर समय लिया जाता है, लेकिन इसके लिये जीवन कहीं ठहरता नहीं, जीवन की अनन्य गतिविधियों के साथ यह सब भी चलता रहता है। यह तुलसी की भक्ति की व्यवहारिकता का प्रमाण है। उसकी सहजता का साक्ष्य है। डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी लिखते हैं, ईश्वर में पूरी आस्था और मनुष्य का पूरा सम्मान ये दोनों दृष्टियाँ तुलसी में एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं। ‘सियाराममय सब जग जानी। करहुँ प्रनाम जोरि जुग पानी।’ जैसे पंक्तियाँ इस गहरे आत्मविश्वास पर ही लिखी जा सकती हैं, जहाँ ईश्वर और मनुष्य दोनों की एक साथ प्रतिष्ठा हो। “अनुभूति और अभिव्यक्ति का जैसा संश्लिष्ट रूप रचना में वस्तुतः प्रत्याशित है, वह ईश्वर और मनुष्य की इस एकरूपता में से निकलता है।”⁵ रामचरितमानस तुलसीदास का ही नहीं अपितु विश्व साहित्य के श्रेष्ठतम ग्रंथ में एक है। काव्य का लक्ष्य लोकमंगल मानते हुए अपने आराध्य मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचंद्र के माध्यम से तुलसी ने जीवन का आदर्श रूप प्रस्तुत किया है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूचि

1 विश्वनाथ मिश्र- हिंदी साहित्य का अतीत, पृ. 257.

2 एडविन ग्रीव्ज- A Sketch of Hindi Literature, p. g 59

3 कल्याण- श्री राम भक्ति अंक पृ 123.

4 रामचरितमानस, अरण्य काण्ड, दोहा 34 - 35, पृ. 611 - 612

5 डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी- हिंदी साहित्य और संवेदना का अवरूप, पृ. 58.

साहित्याकाश